गांधी के विचार

आज़ादी नीचे से शुरू होनी चाहिए। हर एक गाँव में लोगों की हुकूमत होगी। ऐसा भारत अनगिनत गाँवों का बना होगा। उसका फैलाव एक के ऊपर एक के ढंग पर नहीं, बल्कि लहरों की तरह एक के बाद एक की शक्ल में होगा। ज़िन्दगी मीनार की शक्ल में नहीं होगी, जहाँ ऊपर की तंग चोटी को नीचे के चौड़े पाये पर खड़ा होना होता है। वहाँ तो समुद्र की लहरों की तरह ज़िन्दगी एक के बाद एक घेरे की शक्ल में होगी और व्यक्ति उसका मध्यबिन्दु होगा। वह व्यक्ति हमेशा अपने गाँव की खातिर मिटने को तैयार रहेगा। गाँव अपने इर्द–गिर्द के गाँवों के लिये मिटने को तैयार होगा। इस तरह आख़िर सारा समाज ऐसे लोगों का बन जायेगा, जो उद्धत बनकर कभी किसी पर हमला नहीं करते, बल्कि हमेशा नम्र रहते हैं, जिसके वे एक ज़रूरी अंग हैं। इसलिए सबसे बाहर का घेरा या दायरा अपनी ताकत का उपयोग भीतरवालों को कुचलने में नहीं करेगा, बल्कि उन सबको ताकत देगा और उनसे ताकत पायेगा ....। अगर गाँव नष्ट हो जायँ, तो हिन्दुस्तान भी नष्ट हो जायेगा। वह हिन्दुस्तान नहीं रह जायेगा। दुनिया में उसका अपना 'मिशन' ही ख़त्म हो जायेगा।

– महात्मा गांधी

बिहार सरकार
शिक्षा विभाग
जन शिक्षा निदेशालय
विकास भवन, पटना, बिहार

चम्पारण सत्याग्रह के 100 वें वर्ष पर गांधी जी की 100 सूक्तियाँ

बिहार सरकार
शिक्षा विभाग

चम्पारण सत्याग्रह के 100 वें वर्ष पर गांधी जी की 100 सूक्तियाँ (100 Sayings)

जन शिक्षा निदेशालय, शिक्षा विभाग

यद्यपि आप अल्पमत में हों,
पर सच तो सच है।

– महात्मा गांधी

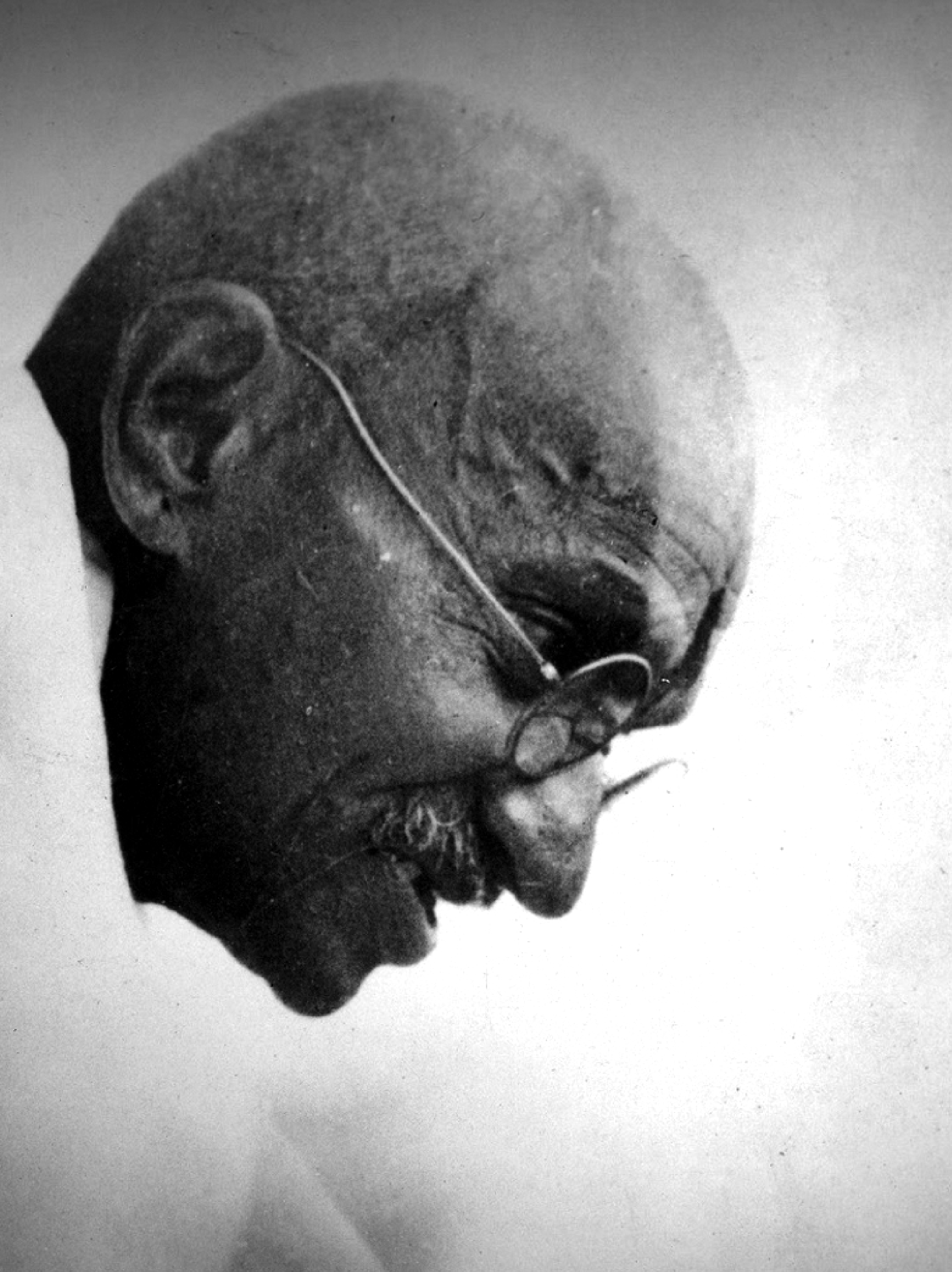

अहिंसा

1. मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा भगवान है। अहिंसा उसे पाने का साधन।

2. अहिंसा मानवता के लिए सबसे बड़ी ताकत है। यह आदमी द्वारा तैयार विनाश की ताकत के हथियार से अधिक शक्तिशाली है।

3. मैं मरने के लिए तैयार हूँ, पर ऐसी कोई वजह नहीं है, जिसके लिए मैं मारने को तैयार हूँ।

4. मैं हिंसा का विरोध करता हूँ, क्योंकि जब ऐसा लगता है कि वह अच्छा कर रही है तब वह अच्छाई अस्थायी होती है, और वह जो बुराई करती है, वह स्थायी होती है।

आज़ादी

5. किसी की मेहरबानी माँगना, अपनी आज़ादी बेचना है।

6. जब तक गलती करने की स्वतंत्रता न हो, तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।

7. मृत और बेघर को इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह तबाही सर्वाधिकार या फिर स्वतंत्रता या लोकतंत्र के पवित्र नाम पर लायी जाती है!

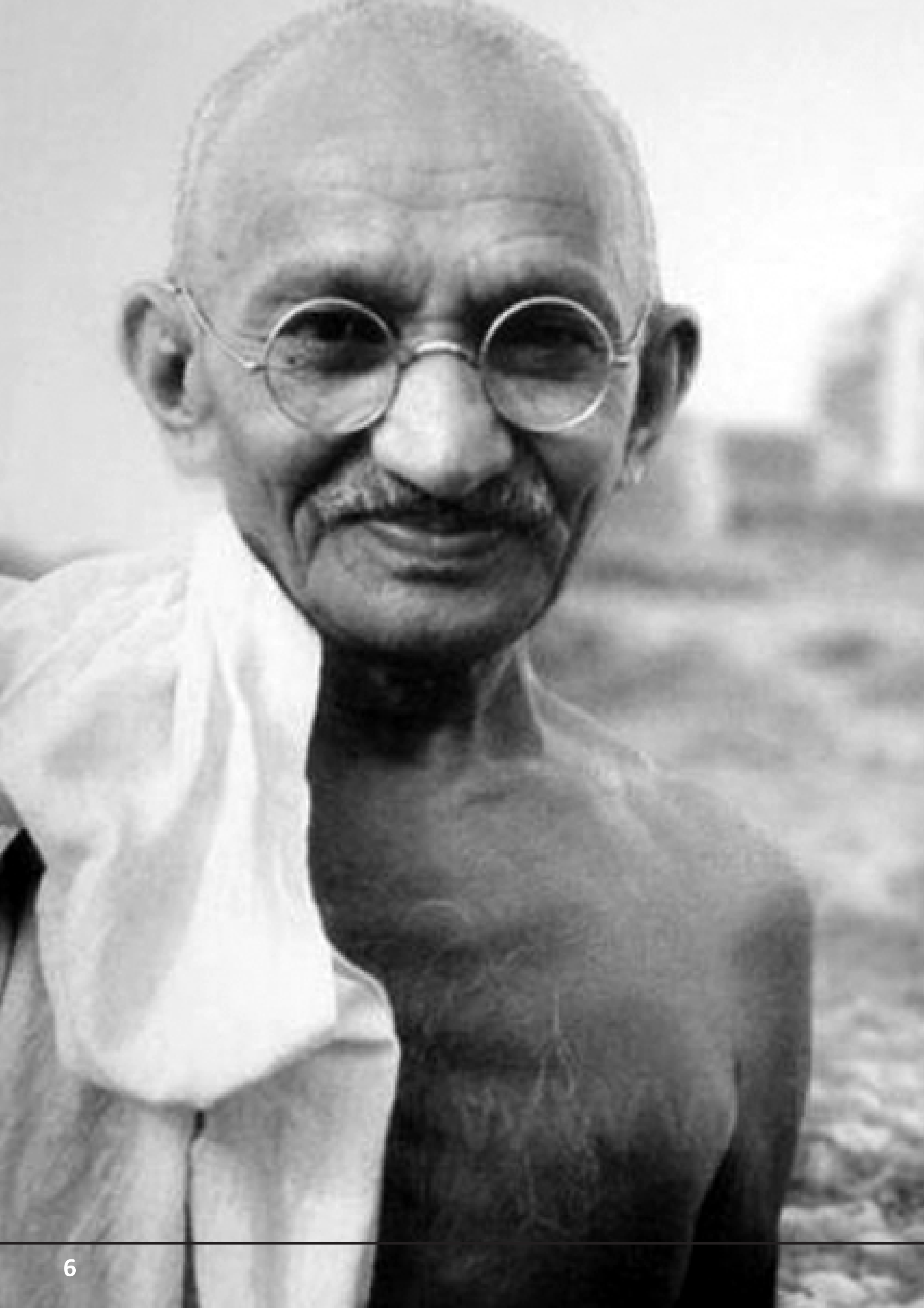

आत्मसम्मान

8. मैं किसी को भी गंदे पाँव अपने मन से नहीं गुजरने दूँगा।

9. मेरी अनुमति के बिना कोई भी मुझे ठेस नहीं पहुँचा सकता।

10. किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए सोने की बेड़ियाँ, लोहे की बेड़ियों से कम कठोर नहीं होतीं। चुभन धातु में नहीं, वरन बेड़ियों में ही होती है।

आत्मज्ञान

11. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है, जो चमकदार और साफ कर देती है।

12. स्वयं को जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है–स्वयं को औरों की सेवा में डुबो देना।

13. वास्तविक सौंदर्य हृदय की पवित्रता में है।

14. जहाँ पवित्रता है, वहीं निर्भयता है।

15. स्वस्थ असंतोष प्रगति के लिए प्रस्तावना है।

16. व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ो से नहीं, अपितु उसके चरित्र से की जाती है।

17. जो बदलाव आप दुनिया में देखना चाहते हैं, वह पहले स्वयं में लायें।

18. आप तब तक यह नहीं समझ पाते कि आपके लिए कौन महत्वपूर्ण है, जब तक आप उन्हें वास्तव में खो नहीं देते।

19. कानों का दुरुपयोग मन को दूषित और अशांत करता है।

20. मौन रहना सबसे सशक्त भाषण है, धीरे–धीरे दुनिया आपको सुनेगी।

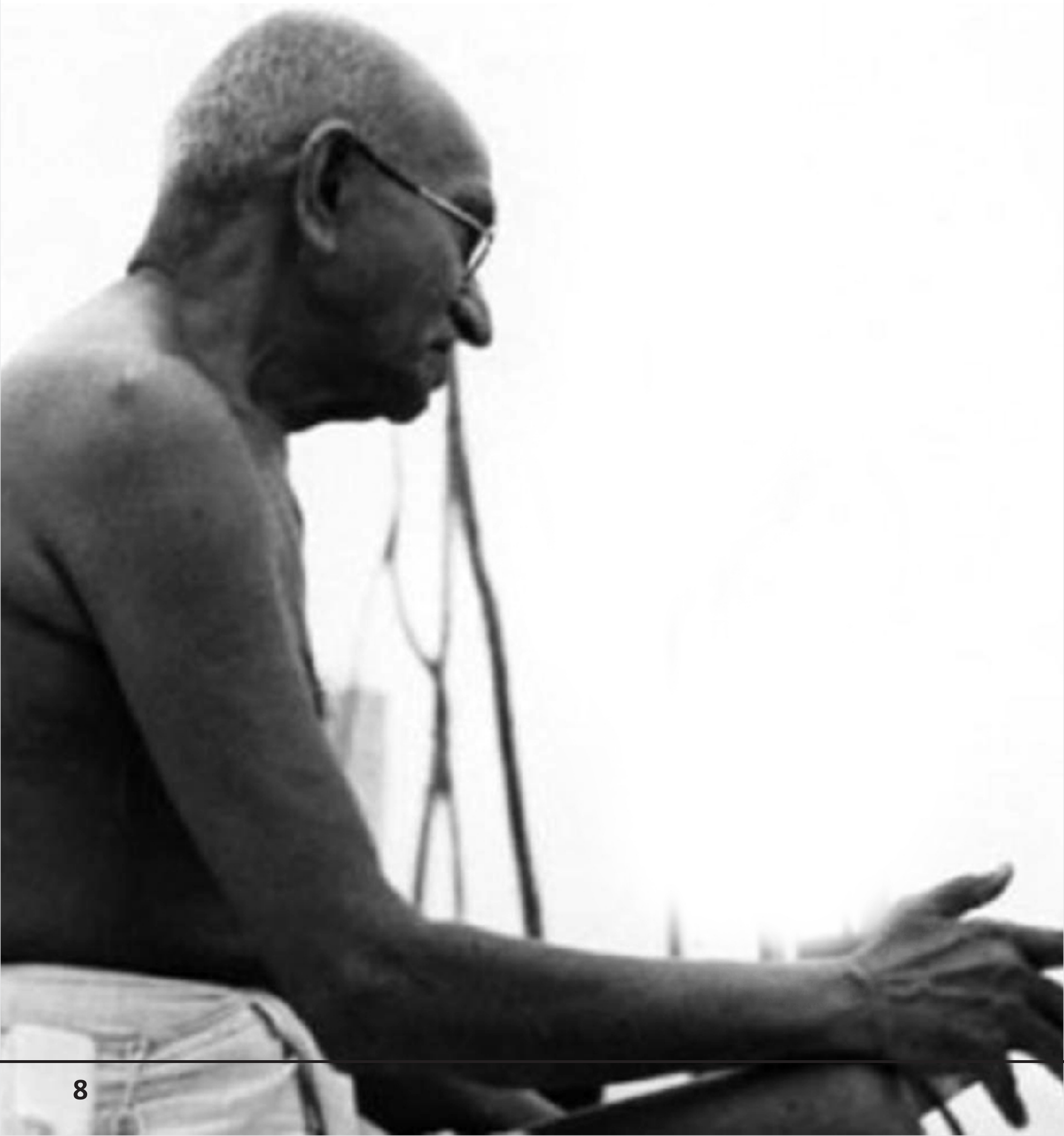

इच्छाशक्ति

21. शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती, यह अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।

22. अपने प्रयोजन में दृढ़ विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रुख को बदल सकता है।

23. संपूर्ण विश्व का इतिहास उन व्यक्तियों के उदाहरणों से भरा पड़ा है, जो अपने आत्मविश्वास साहस तथा दृढ़ता की शक्ति से नेतृत्व के शिखर पर पहुँचे हैं।

24. उफनते तूफान को मात देना है, तो अधिक जोखिम उठाते हुए हमें पूरी शक्ति के साथ आगे बढ़ना होगा।

क्रोध

25. क्रोध एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है।

26. क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं।

27. क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है।

खुशी

28. हँसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है।

29. खुशी तब मिलेगी, जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सामंजस्य में हों।

30. केवल प्रसन्नता ही एकमात्र इत्र है, जिसे आप दूसरों पर छिड़कें, तो उसकी कुछ बूँदें अवश्य ही आप पर भी पड़ जाती हैं।

31. एक कृत्य द्वारा किसी एक दिल को खुशी देना, प्रार्थना में झुके हजार सिरों से बेहतर है।

गरीबी

32. दुनिया में ऐसे लोग हैं, जो इतने भूखे हैं कि भगवान उन्हें किसी और रूप में नहीं दिख सकता, सिवाय रोटी के रूप में।

33. गरीबी दैवी अभिशाप नहीं, बल्कि मानव रचित षड्यन्त्र है।

जीवन

34. मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।

35. हमारा जीवन सत्य का एक लम्बा अनुसंधान है और इसकी पूर्णता के लिए आत्मा की शांति आवश्यक है।

36. सुखद जीवन का भेद त्याग पर आधारित है। त्याग ही जीवन है।

37. ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो। ऐसे सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीनेवाले हो।

38. हर रात जब मैं सोने जाता हूँ, मैं मर जाता हूँ और अगली सुबह जब मैं उठता हूँ, मेरा पुनर्जन्म होता है।

धर्म एवं प्रार्थना

39. भगवान का कोई धर्म नहीं है।

40. ईश्वर न तो काबा में है और न ही काशी में है, वह तो घर–घर में व्याप्त है, हर दिल में मौजूद है।

41. धर्म दिल का विषय है। कोई शारीरिक असुविधा किसी के अपने धर्म के परित्याग का आश्वासन नहीं देती।

42. जो भी चाहे, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुन सकता है। वह सबके भीतर है।

43. प्रार्थना माँगना नहीं है। यह आत्मा की लालसा है। यह हर रोज अपनी कमजोरियों की स्वीकारोक्ति है।

44. प्रार्थना में बिना वचनों के मन लगाना, वचन होते हुए मन न लगाने से बेहतर है।

नारी

45. नारी को अबला कहना अपमानजनक है। यह पुरुषों का नारी के प्रति अन्याय है।

46. जब कोई युवक विवाह के लिए दहेज की शर्त रखता है, तब वह न केवल अपनी शिक्षा और अपने देश को बदनाम करता है, बल्कि स्त्री जाति का भी अपमान करता है।

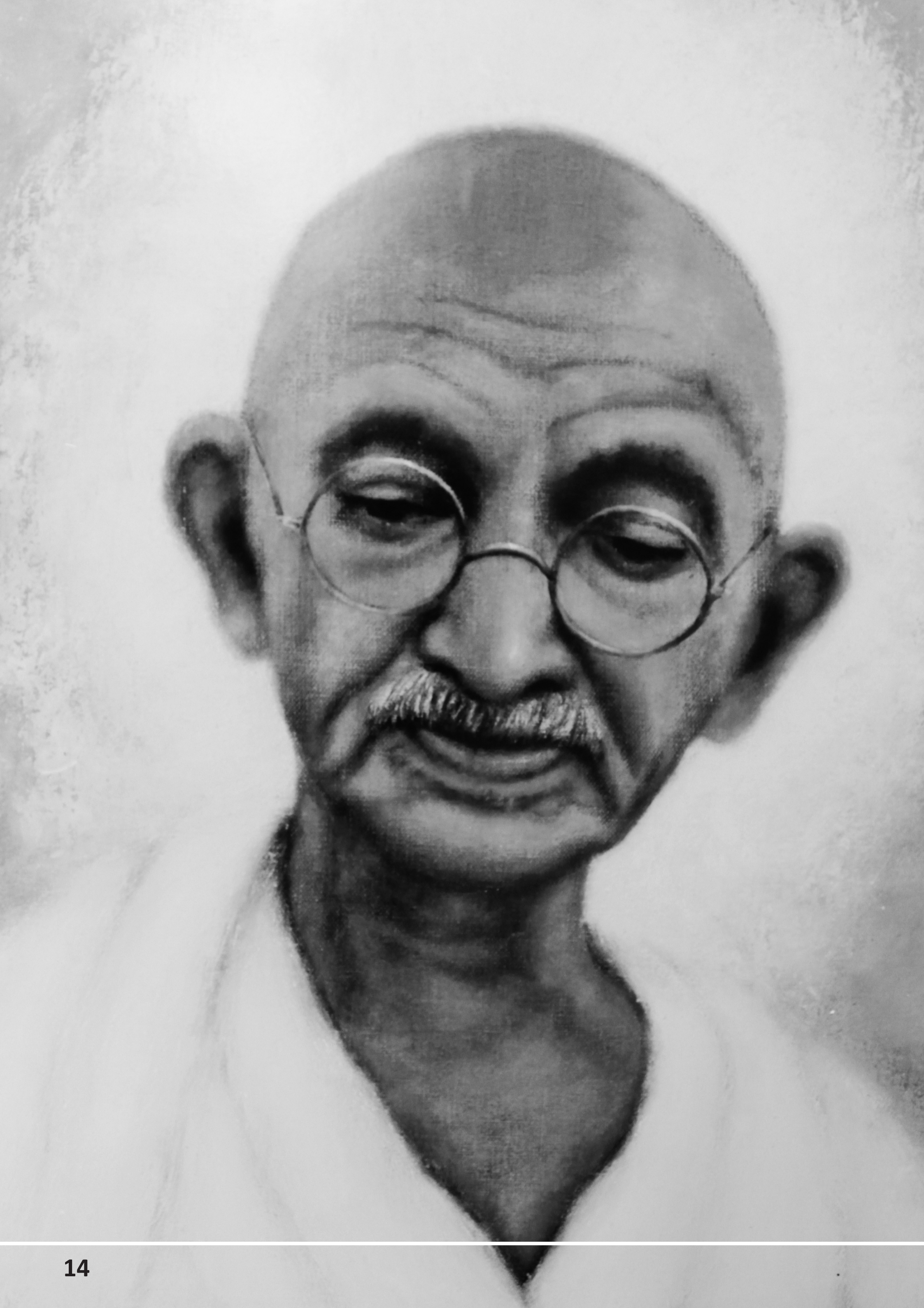

पर्यावरण

47. यह पृथ्वी, हवा, ज़मीन, जल हमें पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली है, बल्कि यह हमारे ऊपर बच्चों का ऋण है। इसलिए कम–से–कम हम उन्हें उस रूप में सौंपें, जैसा कि हमें मिला था।

48. पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरी करने के लिए नहीं।

49. हम जो दुनिया के जंगलों के साथ कर रहे हैं, वह कुछ और नहीं, बस उस चीज़ का प्रतिबिम्ब है, जो हम अपने साथ और एक–दूसरे के साथ कर रहे हैं।

प्रयत्न

50. थोड़ा–सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।

51. संतोष प्रयास में निहित है, न कि प्राप्ति में, पूरा प्रयास ही पूर्ण विजय है।

52. गर्व लक्ष्य को पाने के लिए किये गए प्रयत्न में निहित है, न कि उसे पाने में।

53. हो सकता है, आप कभी न जान सकें कि आपके काम का क्या परिणाम हुआ, लेकिन यदि आप कुछ करेंगे नहीं, तो कोई परिणाम नहीं होगा।

54. आप आज जो करते हैं, उस पर भविष्य निर्भर करता है।

55. कुछ लोग सफलता के सपने देखते हैं, जबकि अन्य व्यक्ति जागते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं।

56. हो सकता है, हम ठोकर खा गिर पड़ें, पर हम उठ सकते हैं, लड़ाई से भागने से तो इतना अच्छा ही है।

57. पहले वे आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वे आप पर हँसेंगे, फिर वे आप से लड़ेंगे और तब आप जीत जायेंगे।

प्रेम

58. जहाँ प्रेम है, वहाँ जीवन है।

59 . दिल की कोई भाषा नहीं होती, दिल, दिल से बात करता है।

60. जिस दिन प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रति प्रेम पर हावी हो जायेगी, दुनिया में अमन आ जायेगा।

61. कुछ करने में या तो उसे प्रेम से करें या उसे कभी करें ही नहीं।

62. प्रेम दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है और फिर भी हम जिसकी कल्पना कर सकते हैं, उसमें सबसे नम्र है।

63. जब भी आपका सामना किसी विरोधी से हो, उसे प्रेम से जीतें।

64. एक कायर प्रेम का प्रदर्शन करने के काबिल नहीं है, यह बहादुर का विशेषाधिकार है।

मद्य–निषेध

65. शराब से शरीर नष्ट होता है और आत्मा भ्रष्ट होती है। शराब का सेवन करने वाला इंसान हैवान हो जाता है।

मूल्य एवं विचार

66. आपकी मान्यताएँ आपके विचार बन जाते हैं, आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं, आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं, आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं, आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती है।

67. एक देश की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से आँका जा सकता है कि वहाँ जानवरों से कैसे व्यवहार किया जाता है।

68. इन्सान अकसर वही बनता है, जो वह अपने बारे में सोचता है। यदि सोचने लगूँ कि मैं कुछ नहीं कर सकता, तो वाकई कुछ भी करने में असमर्थ रहूँगा, लेकिन जब मुझे यह विश्वास होगा कि मैं कर सकता हूँ, तो मुझमें वह करने की योग्यता भी आ जाएगी, जो शुरू में मेरे पास नहीं थी।

69. हमेशा अपने विचारों को शुद्ध करने का लक्ष्य रखेंगे, तो सब कुछ ठीक हो जायेगा।

विश्वास

70. विश्वास करना एक गुण है, अविश्वास दुर्बलता की जननी है।

71. किसी चीज़ में यकीन करना और उसे न जीना बेईमानी है।

72. आप मानवता में विश्वास मत खोइए, मानवता सागर की तरह है। अगर सागर की कुछ बूँदें गन्दी हैं, तो सागर गन्दा नहीं हो जाता।

सत्य

73. सत्य एक है, मार्ग अनेक।
74. सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों–ज्यों सेवा की जाती है, त्यों–त्यों उसमें अनेक फल आते हुए नजर आते हैं, जिनका अंत ही नहीं होता।
75. सत्य बिना जनसमर्थन के भी खड़ा रहता है। वह आत्मनिर्भर है।
76. सत्य कभी भी ऐसे कारण को क्षति नहीं पहुँचता जो उचित हो।
77. यद्यपि आप अल्पमत में हों, पर सच तो सच है।
78. विश्व के सभी धर्म, भले ही और चीज़ों में अंतर रखते हों, लेकिन सभी इस बात पर एकमत हैं कि दुनिया में कुछ नहीं, बस सत्य जीवित रहता है।
79. कोई त्रुटि तर्क–वितर्क करने से सत्य नहीं बन सकती और न ही कोई सत्य इसलिए त्रुटि नहीं बन सकता है, क्योंकि कोई उसे देख नहीं रहा।
80. चलिए, सुबह का पहला काम ये करें कि इस दिन के लिए संकल्प करें कि मैं दुनिया में किसी से डरूँगा नहीं। मैं किसी के प्रति बुरा भावना न रखूँ। मैं किसी के अन्याय के समक्ष झुकूँ नहीं। मैं असत्य को सत्य से जीतूँ और असत्य का विरोध करते हुए, मैं सभी कष्टों को सह सकूँ।
81. 'परमेश्वर ही सत्य है'– यह कहने के बजाय 'सत्य ही परमेश्वर है' कहना अधिक उपयुक्त है।
82. सत्य कभी ऐसे कारणों को क्षति नहीं पहुँचाता, जो उचित हो।
83. जब मैं निराश होता हूँ, मैं याद कर लेता हूँ कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम के मार्ग की ही हमेशा विजय होती है। कितने ही तानाशाह कुछ समय के लिए अजेय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन होता है।
84. पूर्ण धारणा के साथ बोला गया 'नहीं' सिर्फ दूसरों को खुश करने या समस्या से छुटकारा पाने के लिए बोले गए 'हाँ' से बेहतर है।

सत्याग्रह

85. सत्याग्रह आत्मा की ताकत है, यह शुद्ध और सरल है। सत्याग्रह बाहरी मदद पर निर्भर नहीं होता, यह तो भीतर की ताकत से उत्पन्न होता है।

शांति

86. शांति का कोई रास्ता नहीं है, केवल शांति है।

87. मैं तुम्हें शांति का प्रस्ताव देता हूँ, मैं तुम्हे प्रेम का प्रस्ताव देता हूँ, मैं तुम्हारी सुन्दरता देखता हूँ, मैं तुम्हारी आवश्यकता सुनता हूँ, मैं तुम्हारी भावना महसूस करता हूँ।

शिक्षा व ज्ञान

88. सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा के आधार हैं।
89. शिक्षा अंधकार से उजाले की ओर ले जाती है।
90. शिक्षा से ही कुरीतियों का नाश संभव है।
91. शिक्षा ही संस्कार को जन्म देती है।
92. करोड़ो लोगों का निरक्षर रहना भारत के लिए कलंक और अभिशाप है। इससे मुक्ति पानी होगी।
93. पुस्तकें मन के लिए साबुन का कार्य करती हैं।
94. पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।
95. ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र–निर्माण होना चाहिए।
96. चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए।
97. अपने ज्ञान पर ज़रूरत से अधिक यकीन करना मूर्खता है, यह याद दिलाना ठीक होगा कि सबसे मजबूत कमजोर हो सकता है और सबसे बुद्धिमान गलती कर सकता है।

क्षमा

98. पाप से घृणा करो, पापी से प्रेम करो।
99. आँख के बदले में आँखे, पूरे विश्व को अंधा बना देगी।
100. कमजोर कभी माफ़ नहीं कर सकते हैं। माफ़ करना तो ताकतवर की विशेषता है।

स्वचिन्तन

बापू की सूक्तियों के सन्दर्भ में आप अपना विचार, अपनी भावना, अपने संकल्प ... जो चाहें यहाँ लिख सकते हैं।

स्वचिन्तन

बापू की सूक्तियों के सन्दर्भ में आप अपना विचार, अपनी भावना, अपने संकल्प ... जो चाहें यहाँ लिख सकते हैं।

स्वचिन्तन

बापू की सूक्तियों के सन्दर्भ में आप अपना विचार, अपनी भावना, अपने संकल्प ... जो चाहें यहाँ लिख सकते हैं।

स्वचिन्तन

बापू की सूक्तियों के सन्दर्भ में आप अपना विचार, अपनी भावना, अपने संकल्प ... जो चाहें यहाँ लिख सकते हैं।

Action and Thought

1. A man is but the product of his thoughts; what he thinks he becomes.
2. Action expresses priorities.
3. An ounce of practice is worth a thousand words.
4. I will not let anyone walk through my mind with his dirty feet.
5. See the good in people and help them.
6. The future depends on what you do today.
7. You may never know what results come of your action, but if you do nothing there will be no result.
8. Always aim at complete harmony of thought and word and deed. Always aim at purifying your thoughts and everything will be well.
9. Those who cannot renounce attachment to the results of their work are far from the path.

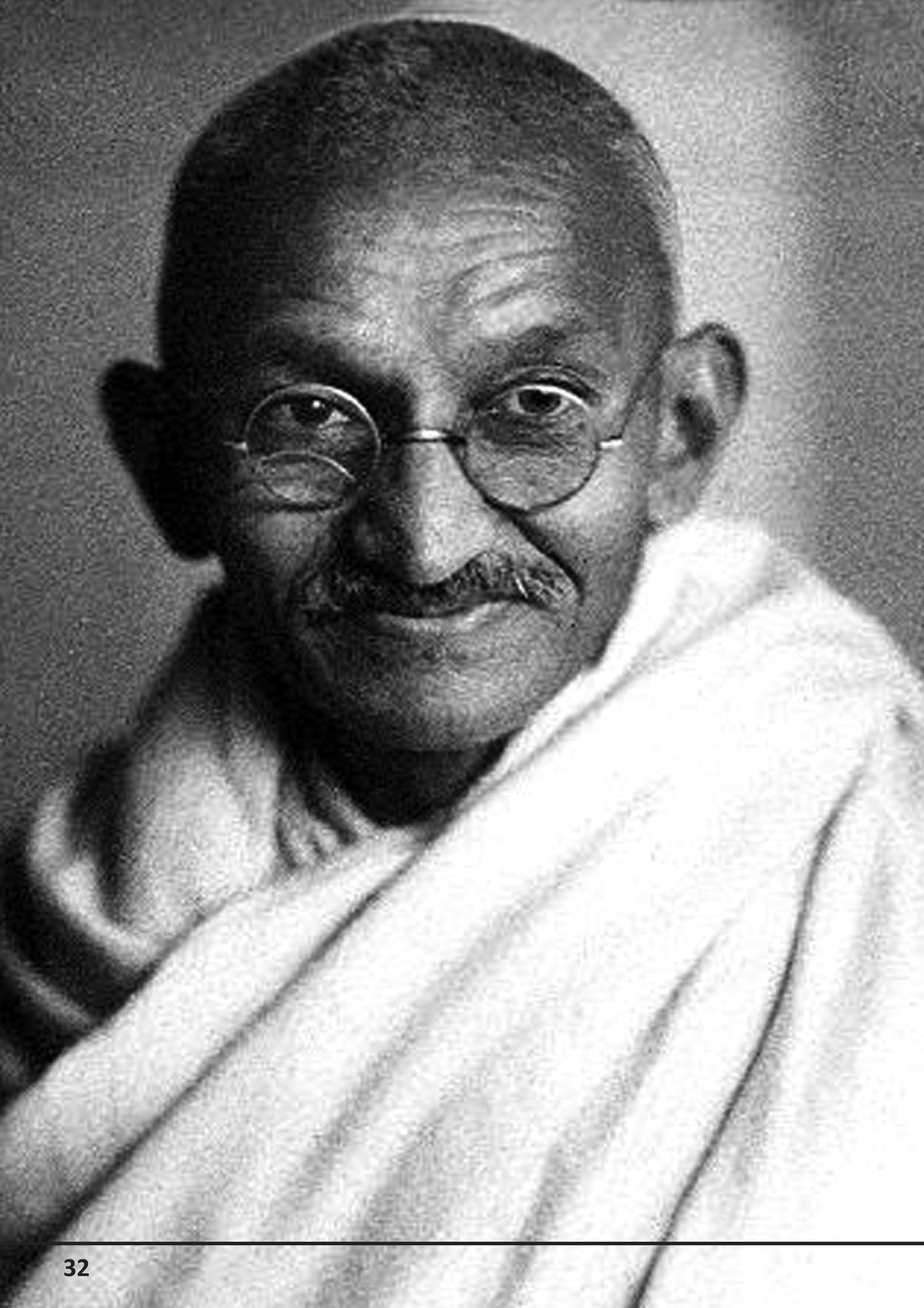

Alcohol

10. Alcohol makes devil.
11. Alcohol ruins body, destroys soul.
12. Alcohol ruins one physically, morally, intellectually and economically.
13. A snake can only destroy the body, but the curse of drink corrupts the soul within.

Culture & Civilization

14. A nation's culture resides in the hearts and in the soul of its people.
15. Civilization is the encouragement of differences.
16. Civilization is that mode of conduct which points out to man the path of duty.

Discipline & Greatness

17. There is no deliverance and no hope without sacrifice, discipline and self- control. More sacrifice without discipline will be unavailing.
18. A man's greatness rests not on wealth or social position, but simply and solely on his life and conduct.

19. Education which does not mould character is absolutely worthless.
20. Cleanliness of the mind and body is the first step in education.
21. Real education consists in drawing the best out of yourself. What better book can there be than the book of humanity?
22. Literacy in itself is no education. Literacy is not the end of education or even the beginning. By education I mean an all-round drawing our of the best in the child and man - body, mind and spirit.
23. Basic education links the children, whether of the cities or villages, to all that is best and lasting in India.
24. Persistent questioning and healthy inquisitiveness are the first requisite for acquiring learning of any kind.

Environment

25. The earth, air, land and water are not an inheritance from our fore fathers but are on loan from our children. So we have to handover to them at least as it was handed over to us.
26. What we are doing to the forests of the world is but a mirror reflection of what we are doing ourselves and to one another.
27. Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every man's greed.

Freedom & Leadership

28. Freedom is not worth having, if it does not include the freedom to make mistakes.
29. You can chain me, you can torture me, you can even destroy this body, but you will never imprison my mind.
30. A leader is useless when he acts against the promptings of his own conscience.
31. Honest differences are often a healthy sign of progress.
32. First they ignore you, then, they laugh at you, then, they fight you, then, you win.
33. One can measure the greatness and the moral progress of a nation by looking at how it treats its animals.

Love, Compassion and Nobility

34. Where there is love, there is life.
35. Hatred can be overcome only by love.
36. Man becomes great exactly in the degree in which he works for the welfare of his fellow men.
37. The day, the power of love overrules the love of power, the world will know peace.
38. Power is of two kinds. One is obtained by the fear of punishment and the other by acts of love. Power based on love is a thousand times more effective and permanent than the one derived from fear of punishment.
39. The good man is the friend of all living things.
40. That service is the noblest which is rendered for its own sake.
41. Whenever you are confronted with an opponent, conquer him with love.
42. Compassion is a muscle that gets stronger with use.

integrity and potentiality

43. God has given me no control over the flowing moment. I am concerned about taking care of the present.
44. Be congruent, be authentic, be your true self.
45. In a gentle way, you can shake the world.
46. When restraint and courtesy are added to strength, the latter becomes irresistible.
47. Be the change you wish to see in the world.
48. To lose patience is to lose the battle.

Peace

49. There is no 'way to peace', there is only 'peace'.
50. If you want real peace in the world, start with children.

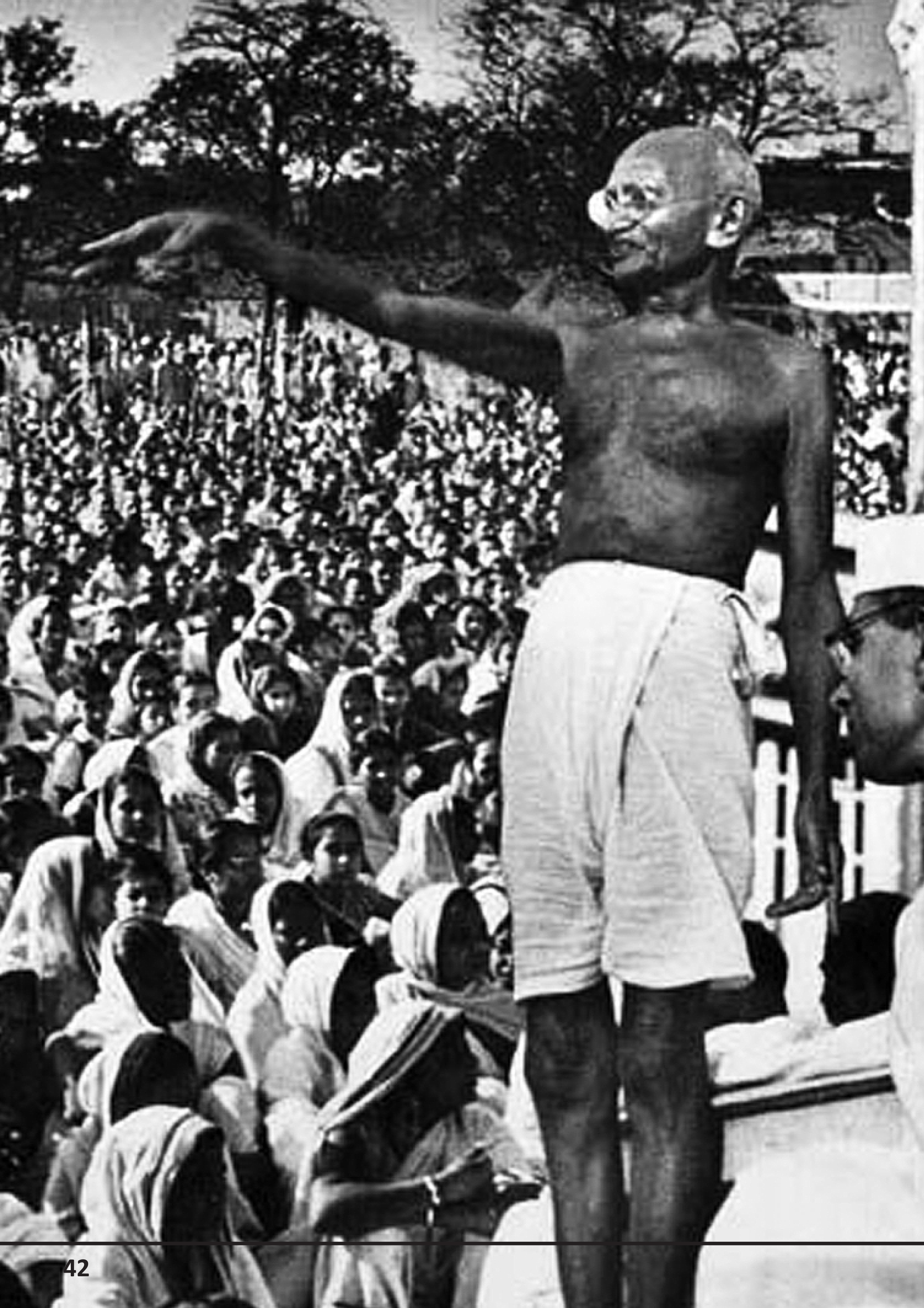

Religion

51. God has no religion.
52. Religion is a matter of the heart. No physical inconvenience can warrant abandonment of one's own religion.
53. I call him religious who understands the suffering of others.
54. It is easy enough to be friendly to one's friends but to befriend one who regards himself as your enemy is the quintessence of true religion.
55. Ashram means a community of men of religion. I feel that an ashram was a necessity of life for me.
56. I believe in the fundamental truth of all great religions of the world.

Faith and Humanity

57. Faith is not something to grasp, it is a state to grow into.
58. Have faith in humanity. Humanity is like an ocean; if a few drops of the ocean are dirty, the whole ocean doesn't become dirty.
59. The greatness of humanity is not in being human, but in being humane.

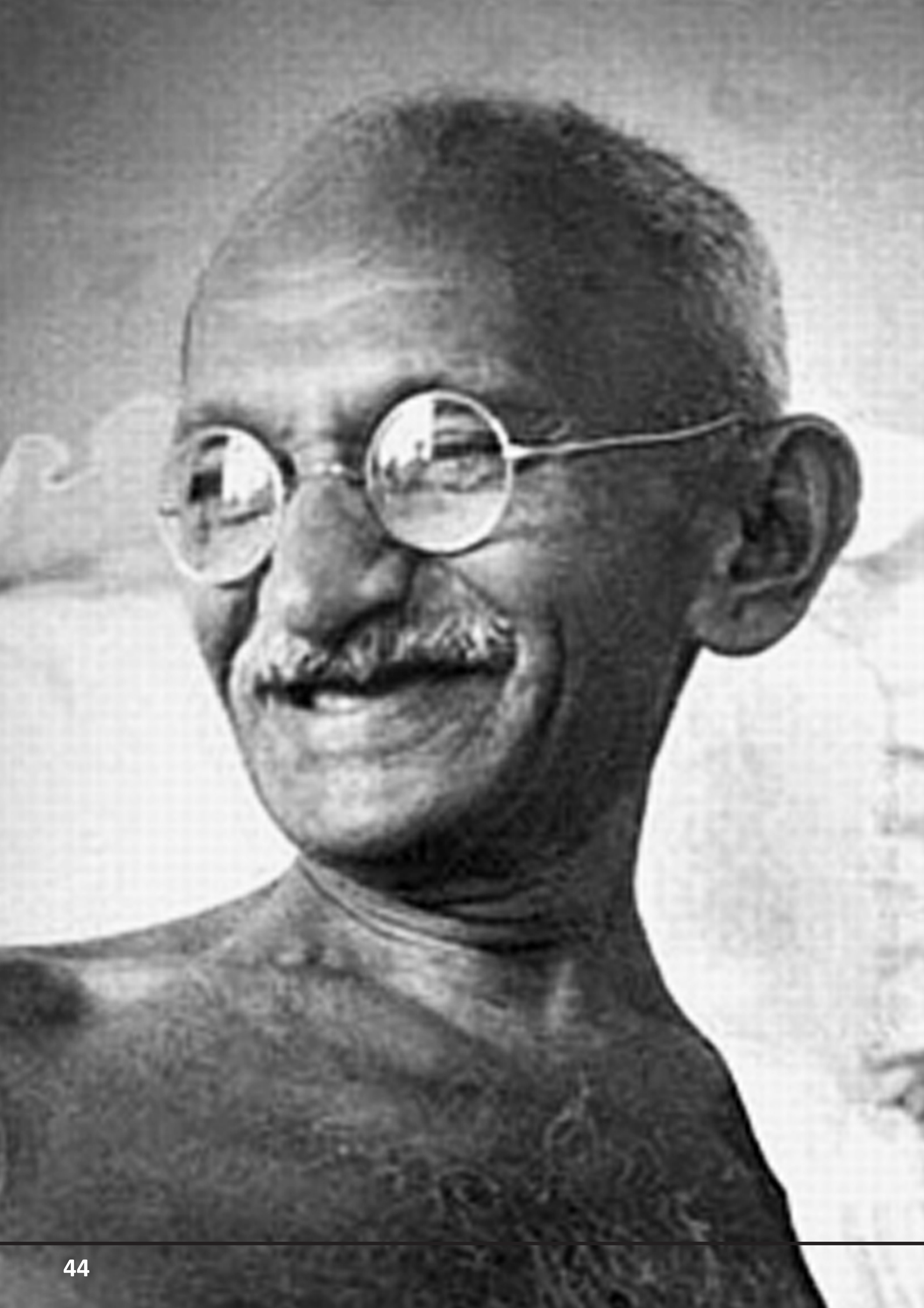

Revenge and Forgiveness

60. The weak can never forgive. Forgiveness is the attribute of the strong.
61. An eye for an eye, will only make the whole world blind.

Satisfaction, Contentment and Happiness

62. Satisfaction lies in the effort, not in attainment.
63. Man's happiness really lies in contentment.
64. Happiness is when what you think, what you say and what you do are in harmony.

Satyagraha

65. Satyagraha is soul-force, pure and simple. Satyagraha does not depend on outside help; it derives all its strength from within.

Strength and Weakness

66. Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will.
67. A coward is incapable of exhibiting love; it is the prerogative of the brave.
68. Silence becomes cowardice when occasion demands speaking out the whole truth and act accordingly.
69. We may stumble and fall but shall rise again: it should be enough if we did not run away from the battle.

Sin and Sinner

70. It is a sin to forget, but it is an even greater sin to hide.
71. Hate the sin, love the sinner.
72. If you have done wrong, whether knowingly or unknowingly, announce it at once and make a resolve not to do it again.

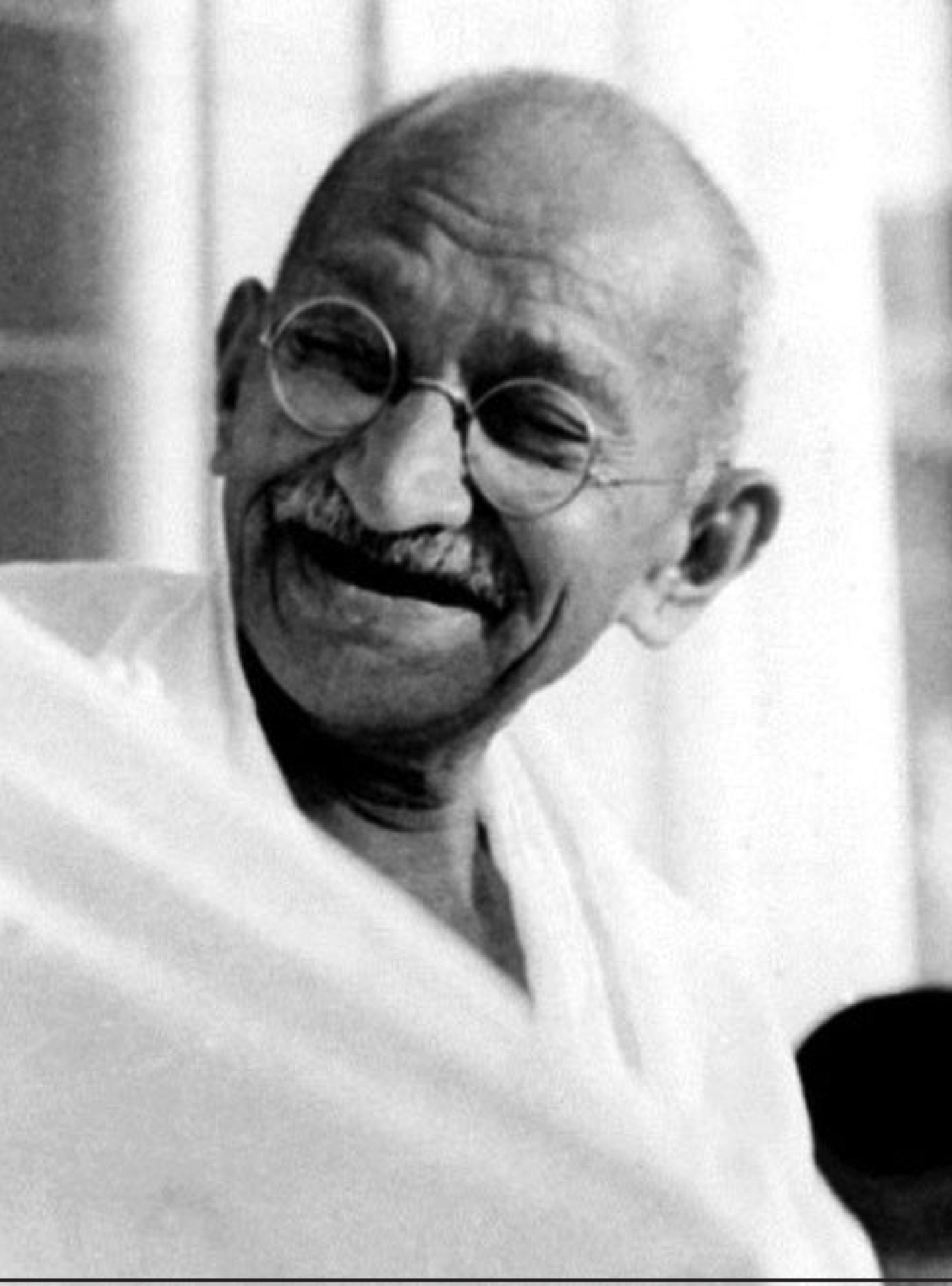

Tolerance

73. Anger and intolerance are the enemies of correct understanding.
74. Silence is the most helpful in conquering anger.
75. Intolerance is itself a form of violence and an obstacle to the growth of a true democratic spirit.
76. The hardest heart and the grossest ignorance must disappear before the rising sun of suffering without anger and without malice.

Truth

77. Truth is one, paths are many.
78. Truth never damages a cause that is just.
79. Even if you are a minority of one, the truth is the truth.

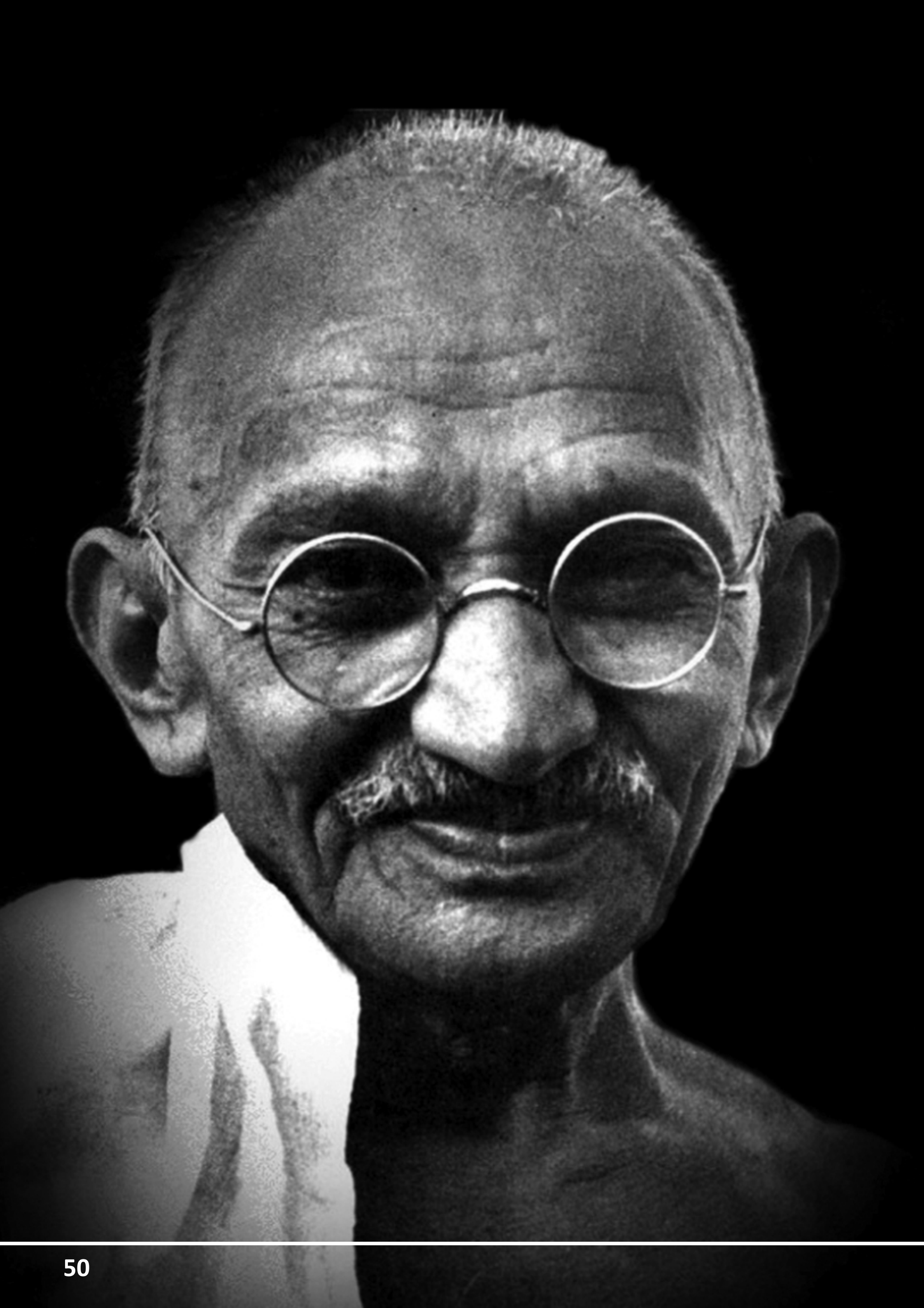

Violence and Non-violence

80. Non-violence is the greatest force at the disposal of mankind. It is mightier than the mightiest weapon of destruction devised by the ingenuity of man.
81. I object to violence because when it appears to do good, the good is only temporary; the evil it does is permanent.
82. We can never be strong enough to be entirely non-violent in thought, word and deed. But we must keep non-violence as our goal and make strong progress towards it.
83. Ahimsa means not to injure any creature by thought, word or deed, not even to the supposed advantage of this creature.
84. Victory attained by violence is tantamount to a defeat, for it is momentary.
85. It is better to be violent, if there is violence in our hearts, than to put on the cloak of non-violence to cover impotence.
86. Ahimsa requires deliberate self-suffering, not a deliberate injuring of the supposed wrongdoer.

Women

87. Woman is more fitted than man to make exploration and take bolder action in non-violence.

88. There is no occasion for women to consider themselves subordinate or inferior to men.

89. Woman is the companion of man, gifted with equal mental capacity.

90. If by strength is meant moral power, then, woman is immeasurably man's superior.

91. Of all the evils for which man has made himself responsible, none is so degrading, so shocking or so brutal as his abuse of the better half of humanity; the female sex.

92. Remember, if you are married, that your wife is your friend, companion and co-worker, not an instrument of sexual enjoyment.

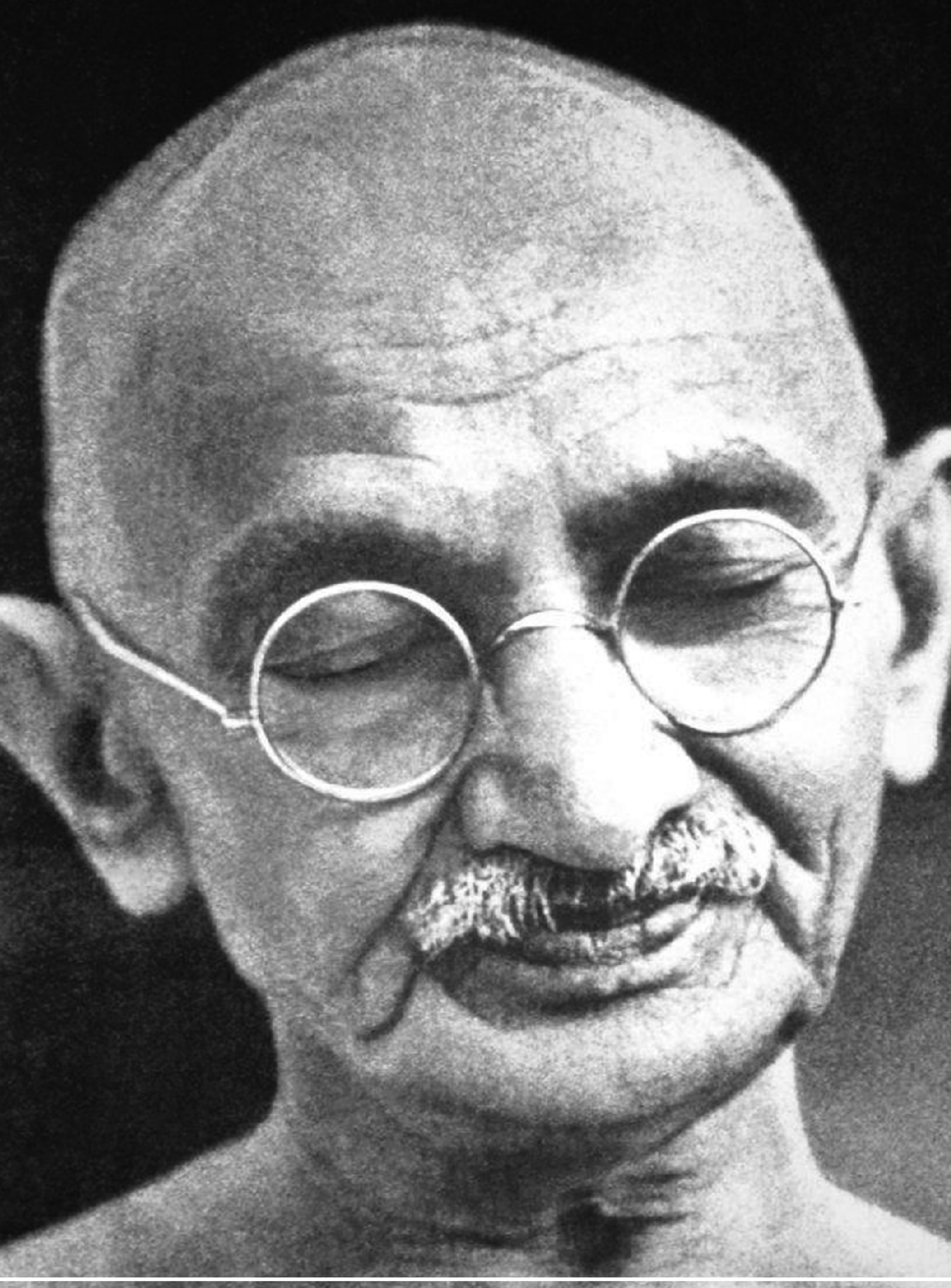

Work, Belief and Conviction

93. Your work may be insignificant, but it is important that you do something.
94. Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.
95. It is easier to build a boy than to mend a man.
96. A 'No' uttered from the deepest conviction is better than a 'Yes' uttered merely to please, or worse, to avoid trouble.
97. Your beliefs become your thoughts, your thoughts become your words, your words become your actions, your actions become your habits, your habits become your values and your values become your destiny.
98. To believe in something, and not to live it, is dishonest.
99. If I have the belief that I can do it, I shall surely acquire the capacity to do it even if I may not have it at the beginning.
100. As long as you derive inner help and comfort from anything, keep it.

Self Reflection

With reference to the quotes of Mahatma Gandhi you can write your views, ideas, pledges ... as you like.

Self Reflection

With reference to the quotes of Mahatma Gandhi you can write your views, ideas, pledges ... as you like.

Self Reflection

With reference to the quotes of Mahatma Gandhi you can write your views, ideas, pledges ... as you like.

Self Reflection

With reference to the quotes of Mahatma Gandhi you can write your views, ideas, pledges ... as you like.

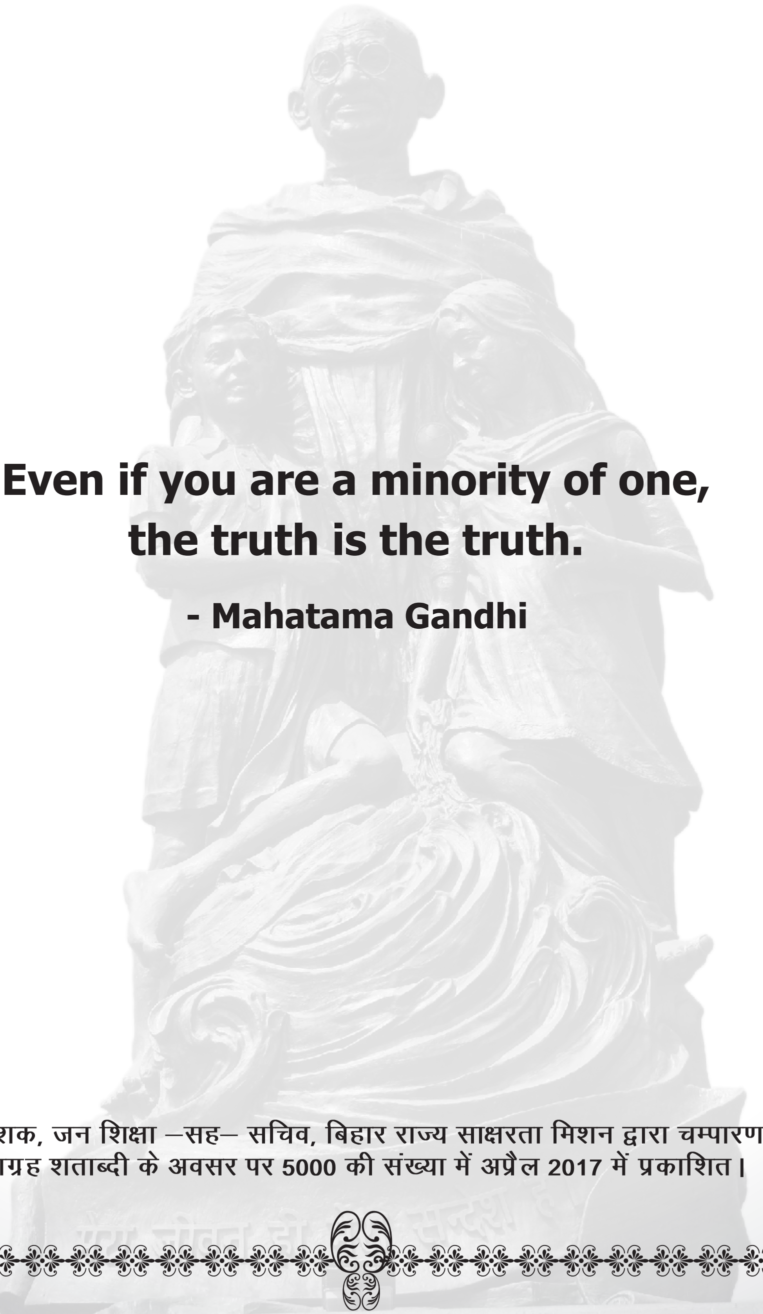

Even if you are a minority of one,
the truth is the truth.

- Mahatama Gandhi

निदेशक, जन शिक्षा –सह– सचिव, बिहार राज्य साक्षरता मिशन द्वारा चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी के अवसर पर 5000 की संख्या में अप्रैल 2017 में प्रकाशित।